ISSN : 2583-2948

नीलोत्पल रमेश की तीन कविताएं

नीलोत्पल रमेश
पुराना शिव मंदिर ,बुध बाजार ,गिद्दी -ए,
जिला - हजारीबाग, झारखंड -829108
मोबाइल -09931117537,08709791120

नीरसता खत्म हो सके

कोयल की कूक सुनते ही
मां कहती -
शुभ दिनों की शुरुआत
होने वाली है
शादी-विवाह और लग्न
कितने ही प्रेमी जोड़ों के जीवन में
लौटाने वाला है फागुनी बयार
ताकि उमंग का रंग
बना रहे
कुछ दिनों तक

कोयल!
तेरे गीतों में
गजब का अल्हड़पन और मस्ती है
जो किसी को भी
अपना बनाने में सक्षम है
पर, तेरे रूप रंग से
कागा का भ्रम होना लाजिमी है
जब तक तू कूकती नहीं

आम की मंजरियों से
अलमस्त करने वाली खुशबू
जब फैलती है
तो तुम भी रसपान करती हुई
कूक पड़ती हो
और जन-संकुलता में
गजब का नशा छा जाता है

कोयल!
क्या तुमसे सीख ले
आदमी कुछ बन सकता है!
या अपने जीवन में
ला सकता है मिठास!

ISSN : 2583-2948

ताकि उसके जीवन में
जो आ गई है नीरसता
वह खत्म हो सके!

****

तेरे नाम के साथ

कोयल!
तूने पाया है जो स्वर
और उसमें जो जादू है
उसमें चराचर जगत के
सभी जड़-चेतन समाहित हैं

ऐ स्वर की मल्लिका!
मेरे मन मस्तिष्क पर
छायी ही रहती हो
पर तेरी आवाज़ के लिए
इंतजार करना
अखरता है मुझे

मेरा मन कहता है
तू सालों-साल
क्यों नहीं कूकती हो?
कूकते-कूकते
कहीं तुम
थक तो नहीं जाती हो!
पर तेरी थकान
मुझे भरमाती है

क्या ऐसा संभव है
कि तुम कूकती रहो
और मैं उसी स्वर में
खोया-खोया
कुछ ऐसा कर जाऊं
कि दुनिया में
तेरे नाम के साथ
मेरे नाम की सार्थकता
बनी रहे युगों-युगों तक।

****

ISSN : 2583-2948

रचनात्मकता का रसायन

तेरे गीतों में समाहित है
जन्म-जन्मांतर का सम्मोहन
जो सृष्टि के लिए
अत्यंत आवश्यक है
क्योंकि तेरी जादू में
फंसा मानव
चाहकर भी
नहीं निकल पाता है

विरहिन मन में
विरह की वेदना
साला करती
रात और दिन का अंतर
पाला करती

कोयल!
तूने पता नहीं
कितने कवियों-कथाकारों को
दिया है आत्म-संतोष
जिसके बल पर
उन्होंने पाया है
रचनात्मकता का रसायन
और लगातार
लेखनरत रहकर
अपनी सार्थकता सिद्ध की है।
****